By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

B.A History
D-II, P-IV

चीन में साम्यवादियों की सफलता के कारण

(The Causes of Communist Movement in China.)

चीन विश्व के सर्वाधिक लम्बे इतिहास वाले देशों में से एक है। 1840 ई० पश्चात, सामन्ती चीन कदम-कदम पर एक अर्द्ध औपनिवेशिक एवं अर्द्ध सामन्ती देश होता चला गया। चीनी जनता ने राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं मुक्ति व जनवाद और स्वतंत्रता के लिए पुरखों की तरह आगे बढ़ते हुए एक के बाद एक वीरतापूर्वक संघर्ष किया।

बीसवी शताब्दि में चीन में महान और क्रांतिकारी ऐतिहासिक परिवर्तन हुए हैं डा० सनयात सेन के नेतृत्व में सन् 1911 ई० की क्रांति ने सामन्ती राजतंत्र का तख्ता पलट दिया और चीन गणराज्य का जन्म दिया था परन्तु चीनी जनता को समाप्त करने के लिए भी एक बड़ा संघर्ष करना पड़ा जिसे सन 1949 की क्रांति कहते हैं।

चीन में साम्यवाद के सफल होने का कारण:

*1. चीन का भ्रष्ट और कमजोर शासन:- च्यांग काई शेक बहुत ही भ्रष्ट और कमजोर था। द्वितीय विश्व के दौरान चीन के भीतर में चार सरकारें थी।

(i) मंचूरिया जो कि जापान के प्रभाव में था।
(ii) उत्तर पश्चिम चीन में साम्यवादी सरकार जिसके नेता माओं थे।
(iii) नानकिंग को केन्द्र बनाते हुए एक स्वतंत्र सरकार
(iv) शेष क्षेत्रों में शेक की सरकार।

*2 चीन में राष्ट्रवाद का उदय:- डा० सुनयात सेन के नेतृत्व में चीन में एक राजनैतिक जागरण हुआ जिसने छात्रों को बहुत प्रभावित किया और छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा हुई। साम्यवादियों ने भी उग्र राष्ट्रवाद और देश प्रेम का पाठ पढ़ाया

फलस्वरूप च्यांग काई शेक की सरकार जो कि विदेशी प्रभाव में थी उसके विरुद्ध संघर्ष आरम्भ हो गया।

*3. आर्थिक दुर्दशा:- चीन की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं थी फिर द्वितीय विश्व युद्ध ने तो उसकी कमर ही तोड़ दी। मुद्रा स्फीति जोरों पर थी। देश में बेरोजगारी, गरीबी और आर्थिक शोषण के कारण शेक सरकार के विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हो गया।

*4. कृषकों का समर्थन प्राप्त करना:- साम्यवादियों की सफलता के लिए उनके द्वारा कृषकों का समर्थन प्राप्त करने की नीति भी अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। साम्यवादी इस तथ्य को भली-भाँति जानते थे कि चीन एक कृषि प्रधान देश है और वहाँ पर कृषकों को संगठित करके ही क्रांति को सफल बनाया जा सकता है।

*5. जापानी आक्रमण के प्रति साम्यवादियों की नीति:- साम्यवादियों ने सदा ही जापानी आक्रमण का विरोध किया। जापानी आक्रमण के समय सदा ही उन्होंने च्यांग-काई शेक से अपनी शत्रुता को भुलाकर समझौता करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार उन्होंने चीन के हित को अपनी शत्रुता से ऊपर स्थान दिया। साम्यवादी नेताओं ने नारा भी दिया - "हमसे मिलो और मंचूरिया से लड़ो" तथा "चीनी चीनियों से न लड़े"। इसके विपरीत च्यांगकाई शेक ने जापान के आक्रमण को साम्यवादियों के दमन की नीति से बड़ा नहीं माना।

*6. साम्यवादियों की युद्ध नीति:- साम्यवादियों की सफलता के लिए उनका सैन्य संगठन एवं युद्ध प्रणाली भी महत्वपूर्ण थी। साम्यवादी गुरिल्ला आक्रमण में प्रवीण थे। च्यांग काई शेक की कुओमिनतांग सेना में यह दक्षता नहीं थी।

* 7. साम्यवादियो की नैतिकता:– साम्यवादियों की नैतिकता ने भी उनकी संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि करने में महत्वपूर्ण कार्य किया। अमरीकी राजदूत लेटन स्टुअर्ट के शब्दों में – कुओमिनतांग के मुकाबले साम्यवादी दल से भ्रष्टाचार से मुक्त था।

* 8 कुशल नेतृत्व मिलना:– साम्यवादी के सफलता के कारणों का वर्णन करते समय साम्यवादियों को प्राप्त होनेवाले कुशल नेतृत्व के महत्व को नकारा नही जा सकता। साम्यवादियों को माओ त्से तुंग, चाऊ एन लाई, चुतेह, हंलुग जैसे महान नेताओं का संरक्षण मिला। इन नेताओं में कर्मठता, ईमानदारी एवं त्याग की भावना तथा समय को पहचानने की क्षमता थी।

* 9. साम्यवादी आन्दोलन:– प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ही सन् 1921 ई० में चीन में साम्यवादी दल का उदय हो चुका था। सन् 1927 ई० के लगभग 60 हजार लोग इस दल के सदस्य बन चुके थे। इसी दल ने च्यांग काई शेक के भ्रष्ट व कमजोर शासन के विरुद्ध शक्तिशाली विद्रोह प्रारम्भ किया। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान यह दल काफी शक्तिशाली हो चुका था। सन 1949 ई० की क्रांति से पहले ही उत्तर पश्चिमी चीन में साम्यवादी शासन स्थापित भी हो चुका था।

* 10. सोवियत संघ का समर्थन:– चीन की सन 1949 की क्रांति का एक महत्वपूर्ण कारण उसे सोवियत रूस की सहायता व समर्थन मिलना था। सोवियत रूस [illegible] सोच थी कि विश्व में अधिक साम्यवादी शासन [illegible] हो। रूस ने चीन में पूँजीवादी शासन को समाप्त करने के लिए उसे हथियार भी दिये।

सन् 1949 की क्रांति की सफलता के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका छोड़कर विश्व के लगभग सभी महत्वपूर्ण देशों ने चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता दे दी। सोवियत संघ, भारत, पाकिस्तान, ब्रिटेन, डेनमार्क, स्वीडन, वर्मा आदि देशों ने सन् 19.. में चीन को मान्यता दे दी। वर्तमान समय में चीन विश्व राजनीति में चीन अपना एक विशिष्ट महत्व को मान्यता दे दी

निष्कर्ष:- इस प्रकार माना जा सकता है कि उक्त परिस्थितियों के होते हुए भी चीन में कुओमिनतांग के विरोध में साम्यवादियों की विजय अवश्यम्भावी थी। अतः यह मानना कि चीन में साम्यवादियों की विजय मात्र रूसी सहयोग का परिणाम था, उचित एवं तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। चीन में साम्यवादियों की विजय वास्तव में क्रांति की महत्वपूर्ण सफलता थी और अब चीन ने एक नूतन युग में प्रवेश किया।